श्रेष्ठ सुप्रभात

अपने उपकारक के प्रति उदार होना अच्छी बात है लेकिन जो आपको हानि पहुँचाता है उसके प्रति उदार होना महानता की निशानी है

-आचार्य महाश्रमण

NEXT™
NEWS EXCELLENT TODAY

तापमान (डिग्री सेल्सियस)

	अधिकतम	न्यूनतम
श्री डूंगरगढ़	21.0	6.0
बीकानेर	22.0	6.0
जयपुर	22.0	7.0

E- Paper NEXT 0019

newsexcellenttoday.com | 30 दिसंबर 2024, सोमवार | पौष, कृष्ण पक्ष अमावस्या - 2081

जिंदगी के मैदान में जीत.. ओमप्रकाश की प्रेरणा भरी कहानी

NEXT श्रीडूंगरगढ़ क्षेत्र के गांव सांवतसर के 27 वर्षीय ओमप्रकाश बिश्नोई ने अपनी जीवटता और दृढ़ इच्छाशक्ति से यह सिद्ध कर दिया कि किसी भी विपरीत परिस्थिति में भी सफलता हासिल की जा सकती है। बीकानेर के सार्दुल स्पोर्ट्स स्कूल के मैदान में आयोजित 14वीं राज्य स्तरीय पैरा एथलेटिक्स चैंपियनशिप में उन्होंने डिस्कस थ्रो में स्वर्ण पदक जीतकर क्षेत्र का गौरव बढ़ाया। उनकी इस उपलब्धि ने उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर होने वाली पैरा एथलेटिक्स प्रतियोगिता में स्थान दिलाया है।

जीवन के संघर्ष और सफलता की कहानी

ओमप्रकाश का जीवन संघर्षों से भरा रहा है। 2020 में, एक दुर्घटना में हाई वोल्टेज करंट की चपेट में आने से उनके दोनों पैर चले गए। महज 23 वर्ष की उम्र में दिव्यांगता ने उनके जीवन को झकझोर दिया। माता-पिता के लिए अपने युवा बेटे को इस स्थिति में देखना बेहद कठिन था। लेकिन ओमप्रकाश ने हार नहीं मानी। दो वर्षों तक मानसिक और शारीरिक संघर्ष के बाद, उन्होंने अपने टूटे हुए हौसलों को फिर से जोड़ा और जीवन को नए सिरे से जीने का निर्णय लिया।

खेल और शिक्षा में एक नई शुरुआत

ओमप्रकाश ने अपने कोच रामावतार सैन के मार्गदर्शन में डिस्कस थ्रो का अभ्यास शुरू किया। इस प्रतियोगिता में राज्यभर के 31 दिव्यांग खिलाड़ियों के बीच उन्होंने 25 मीटर थ्रो कर स्वर्ण पदक जीता। उनकी इस जीत पर परिजन और जानकार उन्हें बधाइयां दे रहे हैं।

ओमप्रकाश ने बीए द्वितीय वर्ष की पढ़ाई भी शुरू कर दी है। उनके अनुसार, उनका परिवार, विशेष रूप से उनके पिता बुधराम विश्नोई और भाई-बहन, उनका पूरा समर्थन कर रहे हैं। ओमप्रकाश का सपना है कि वह अपने गांव और देश का नाम रोशन करें।

ओमप्रकाश की कहानी न केवल दिव्यांगजनों के लिए बल्कि हर व्यक्ति के लिए प्रेरणा है। उन्होंने दिखाया कि परिस्थितियां चाहे कितनी भी मुश्किल क्यों न हों, अगर आत्मविश्वास और परिवार का सहयोग हो, तो हर बाधा को पार किया जा सकता है। उनका लक्ष्य अब राष्ट्रीय स्तर पर स्वर्ण पदक जीतना है।

फ्रेंड्स ग्रुप ने जरूरतमंदों को बांटे कम्बल

NEXT सर्दी का सितम बढ़ रहा है तो जरूरतमंदों को सर्दी के कहर से बचाने के लिए स्थानीय समाज सेवकों के साथ प्रवासी भी मुक्त हस्त से सहयोग कर रहे हैं। कस्बे की संस्था फ्रेंड्स ग्रुप के उपाध्यक्ष हीरालाल पुगलिया ने बताया कि संस्था द्वारा सामाजिक सरोकारों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया जाता है और इसके लिए संस्था को भामाशाहों द्वारा भी निरंतर सहयोग मिलता रहता है।

हीरालाल ने बताया कि श्रीडूंगरगढ़ निवासी और जयपुर प्रवासी भामाशाह धनराज सुबोध कुमार पुगलिया के आर्थिक सहयोग से शनिवार रात को रेलवे स्टेशन क्रोसिंग के पार स्थित झुग्गी बस्ती में 100कम्बलों का वितरण किया गया। इस दौरान पार्षद पवन उपाध्याय, सामाजिक कार्यकर्ता हीरालाल पुगलिया, अनिल भादानी, जीत, जय, संजय आदि कार्यकर्ता साथ मौजूद रहे।

NEXT नव वर्ष मनाएं बिना शराब के क्योंकि एक बूंद शराब भी सेहत के लिए खतरनाक है

नया वर्ष 2025 आ रहा है और हर एक व्यक्ति इसे अलग अंदाज में मनाएगा। कुछ युवा वर्ग ऐसे भी हैं जो नए वर्ष को शराब पीने का बहाना मानकर फुल टल्ली हो जाते हैं तो एक वर्ग ऐसा भी है जो यह कहता नजर आएगा कि "एक पैग से कुछ नहीं होता।" साल 2022 में विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) की उस स्टडी ने तहलका मचा दिया था, जिसमें कहा गया था कि एक पैग तो छोड़िए एक बूंद शराब भी सेहत के लिए खतरनाक है। WHO ने शराब को नंबर 1 कार्सिनोजेन की लिस्ट में शामिल किया है। कार्सिनोजेन का अर्थ है वो तत्व, जो कैंसर पैदा करते हैं।

इसलिए NEXT अपने पाठकों के लिए लेकर आया है ऐसी जानकारी जो बिना शराब के आपके न्यू ईयर को बेहतरीन बना देगी।

एक बूंद शराब भी सेहत के लिए खतरनाक है। WHO ने शराब को नंबर 1 कार्सिनोजेन की लिस्ट में शामिल किया है। कार्सिनोजेन का अर्थ है वो तत्व, जो कैंसर पैदा करते हैं।

हम बचपन से यह सुनते आए हैं कि साल का पहला दिन जैसा बीतता है, बाकी दिन भी वैसे ही बीतते हैं। अगर आप शराब पीकर न्यू ईयर पार्टी कर रहे हैं तो निश्चित है कि नशे की हालत में नए साल में प्रवेश करेंगे। सुबह उठेंगे तो हैंगओवर होगा, डाइजेशन ठीक नहीं होगा और बहुत संभव है कि सिर भी दर्द से फट रहा होगा।

इसलिए बेहतर है कि बिना शराब पिये न्यू ईयर पार्टी एंजॉय की जाए।

हिन्दू उत्तराधिकार के बारे में जाने

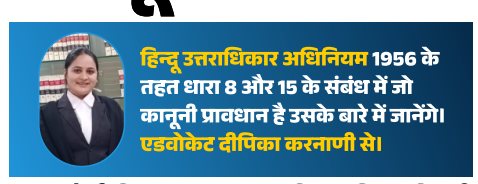

जब कोई हिन्दू पुरूष या महिला बिना किसी वसीयत के मर जाता है तो उसकी संपत्तियों का उसके वारिसानों के मध्य बंटवारा कैसे होगा? इसके सम्बंध में धारा 8 व 15 में बताया गया है।

» **धारा 8 के अनुसार** सबसे पहले वर्ग 1 में वर्णित वारिस जिसमें मृतक का पुत्र/पुत्री/पत्नी/माता/पूर्व मृत पुत्र का पुत्र/पूर्व मृत पुत्री की पुत्री/पूर्व मृत पुत्री का पुत्र/पूर्व मृत पुत्र की विधवा इन सभी को बराबर-बराबर हिस्सा प्राप्त होगा।

» **उदाहरण:** एक हिन्दू पुरुष के मृत्यु के समय उसके पास 1218 दरगज का मकान, 3लाख रुपये नगद और 20तोला सोना है। और उसके दो पुत्र, एक पुत्री, माँ व पत्नी है तो कुल 5वारिस हुए और प्रत्येक वारिस को 1/5 हिस्सा मिलेगा।

अगर हिन्दू पुरूष के मरते वक्त मृतक का पिता जिंदा है तो पिता वर्ग 1अनुसूची में नहीं आएगा और वर्ग 1में मौजूद वारिस जैसे पुत्र, पुत्री, पत्नी, माता आदि है। तो पिता का कोई हक व हिस्सा नहीं होगा।

» **धारा 15 के अनुसार** कोई हिन्दू नारी जिसने अपनी संपत्तियों की कोई वसीयत नहीं कर रखी है और उसका देहांत हो जाता है तो उसकी संपत्ति पुत्र, पुत्री, पति को बराबर मिलेगी। मृतका के कोई पूर्व मृत पुत्र का पुत्र या पुत्री है तो उनको भी बराबर हिस्सा मिलेगा। हिन्दू नारी के कोई पुत्र, पुत्री या पोता या पोती या पति नहीं है तो उस महिला की संपत्ति उसके पति के वारिसों को प्राप्त होगी।

» **धारा 15 के सबसेक्शन 2 के अनुसार** अगर कोई संपत्ति हिन्दू महिला को अपने पिता या माता से विरासत में मिली हो और उसके कोई पुत्र/पुत्री/पोता//पौत्री न हो तो वह संपत्ति महिला के पिता के वारिसों को प्राप्त होगी। अगर हिन्दू नारी को कोई संपत्ति अपने पति या ससुर से विरासत में प्राप्त हुई हो और उस हिन्दू नारी के कोई पुत्र/पुत्री/ पौत्र/पौत्री नहीं हो तो वह संपत्ति पति के वारिसों को प्राप्त होगी।

दिल्ली हाइकोर्ट द्वारा पारित निर्णय ऑल इंडिया रिपोर्टर 2011 के पेज नम्बर 170 में यह अभिनिर्धारित किया गया है कि सौतेली पुत्री या पुत्र को एक हिन्दू महिला की संपत्ति वारिस के रूप में प्राप्त नहीं होगी। सौतेले पुत्र व पुत्री अपने पिता की संपत्ति अपने हक अनुसार प्राप्त कर सकते हैं। अगर कोई हिन्दू महिला की मृत्यु हो जाती है तो उसकी पुत्रवधु का कोई हिस्सा नहीं होता है।

जनजीवन अस्त-व्यस्त, अलाव का सहारा, सर्द हवाओं ने ढाया सितम, लोग घरों में दुबके रहे

NEXT श्रीडूंगरगढ़ और आसपास के क्षेत्रों में इन दिनों कड़ाके की ठंड और शीतलहर ने जनजीवन को बुरी तरह प्रभावित किया है। रविवार को सुबह से लेकर दोपहर तक घना कोहरा छाया रहा, जिससे लोगों को भारी असुविधा का सामना करना पड़ा। सुबह 11 बजे तक कोहरा बना रहने के कारण दृश्यता काफी कम रही, और वाहन चालकों को दिन के समय भी वाहनों की लाइट जलाकर चलना पड़ा।

ठंड का असर जनजीवन पर

शीतलहर और कोहरे के कारण लोग सुबह देर से घरों से बाहर निकले। दैनिक जीवन से जुड़ी गतिविधियां जैसे दूध, सब्जी, ब्रेड, अखबार और अन्य जरूरी सेवाओं में भी देरी हुई। मॉर्निंग वॉक करने वाले लोग भी सामान्य समय से काफी देर बाद, लगभग 8:30 बजे के बाद सड़कों पर नजर आए। ठंड से बचने के लिए लोग जगह-जगह अलाव जलाकर खुद को गर्म रखने की कोशिश कर रहे हैं।

फसलों पर असर: किसानों की उम्मीद और चिंता

हाल ही में हुई मावठ (बारिश) के कारण रबी की फसलों को फायदा होने की संभावना जताई जा रही है। किसानों का कहना है कि ऐसी ठंड और बारिश फसलों के लिए वरदान साबित हो सकती है और पैदावार दोगुनी हो सकती है। हालांकि, बादल छाए रहने और लगातार नमी बढ़ने से फसलों में विभिन्न रोगों के फैलने की आशंका ने किसानों की चिंता बढ़ा दी है। घने कोहरे और अत्यधिक ठंड के कारण फसलों की नियमित देखरेख में भी बाधा उत्पन्न हो रही है।

सामान्य दिनचर्या में देरी

शीतलहर के कारण न केवल किसान, बल्कि आम नागरिकों की दिनचर्या भी प्रभावित हुई है। सुबह का समय कोहरे और ठंड के चलते सुस्त नजर आया। दूध, सब्जी, फल-फूल और अन्य दैनिक जरूरत की चीजों की आपूर्ति करने वाले लोग भी सामान्य समय से देर से अपने काम पर निकले। ठंड के कारण सड़कों और गलियों में सुबह का सन्नाटा देर तक छाया रहा।

कोहरे का दृश्य और सामाजिक जीवन

कोहरे के चलते हर ओर सर्दी का गहरा असर देखा जा सकता है। पेड़ों के पत्तों पर जमी ओस की बूंदें ठंड की तीव्रता को दर्शाती हैं। लोग ठंड से बचने के लिए घरों और सार्वजनिक स्थानों पर अलाव तापते नजर आए। वहीं, कोहरे के कारण सड़कों पर आवाजाही धीमी रही और यातायात प्रभावित हुआ।

ठंड का यह दौर जहां एक तरफ फसलों के लिए लाभकारी साबित हो सकता है, वहीं दूसरी तरफ आम जनजीवन को मुश्किलों में डाल रहा है। क्षेत्र के लोग इस बदलते मौसम के साथ तालमेल बिठाने की कोशिश कर रहे हैं। (Photo Credit : गौरीशंकर शर्मा, सातलेरा)